''ग्वालियर की सांगीतिक परम्परा में तबला वादन शैली का विवेचनात्मक अध्ययन''

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा से संगीत में
पी–एच0 डी0 उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध–प्रबन्ध की
रुपरेखा
2018

निर्देशक

डॉ0 शिवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर–तबला
संगीत विभाग

शोध छात्रा

गायत्री
संगीत–तबला

विभागाध्यक्ष

प्रो0 सुभद्रा कुमारी सतसंगी

कला संकाय प्रमुख

प्रो0 जे0 के0 वर्मा

कला संकाय, संगीत विभाग
दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट
(डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा – 282005

''ग्वालियर की सांगीतिक परम्परा में तबला वादन शैली

का विवेचनात्मक अध्ययन''

भूमिका

संगीत एक ललित कला है तथा ललित कलाओं का सम्बन्ध मानसिक अनुभूतियों से होता है। प्रत्येक ललित कला का कोई न कोई अभिव्यक्ति–माध्यम होता है। जैसे–साहित्य में शब्द, चित्र में रेखाएं आदि इसी प्रकार संगीत का अभिव्यक्ति माध्यम है–नाद। ललित कलाओं के अन्तर्गत काव्यकला, चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला व संगीतकला आते है।

गीत, वाद्य तथा नृत्य इन तीनों के समावेश को संगीत कहते हैं। संगीत में तीन प्रमुख कलाओं का समावेश माना जाता है। प्राचीन ग्रन्थकारों ने गीत को प्रधान माना है वाद्य को गीत का अनुकर्ता तथा नृत्य को गीत और वाद्य दोनों का अनुकर्ता बताया है।

संगीत में वाद्यों का अपना पृथक महत्व है इसके बिना गायन, वादन व नृत्य का सौन्दर्य अधूरा है। आदिकाल से लेकर वर्तमान तक विभिन्न वाद्यों का उद्‌भव विकास एवं उपयोग होता रहा है तथा पृथक पृथक रूप में वाद्य सामनें आयें हैं।

वर्तमान युग में 'तबला' शब्द, हिन्दुस्तानी संगीत में दो उर्ध्वमुखी वाद्यों की जोडी के रूप में दोनों हाथों की अंगुलियों व हथेलियों के आघात से बजाए जाने वाले अवनद्ध वाद्य या कभी कभी उसके दाहिने भाग के लिए व्यवहार किया जाता है।

तबला वाद्य को अधिक स्पष्ट रूप से समझने के लिए तबले के घरानों को समझना आवश्यक है।

घराना– किसी संगीतज्ञ द्वारा अपनी व्यक्गित प्रतिभा, कल्पना व सौन्दर्य के प्रयोग के आधार पर विशिष्ट शैली का निर्माण करना एवं उन्हीं विशेषताओं का उनके शिष्यों व प्रशिष्यों द्वारा अनुसरण एव प्रचार करने से घराना स्थापित हुआ। अतः घराना 'शैली' का दूसरा नाम है।

संगीत की प्रत्येक विधा जैसे गायन, वादन तथा नृत्य की शैलियों, रचनाओं अथवा बन्दिशों आदि का संरक्षण सम्वर्धन करने हेतु एवं भिन्न–भन्न प्रकार की बन्दिशों के विकास हेतु संगीत की

विधाओं के घरानों का विकास हुआ। जैसे गायन के घरानें, विभिन्न वाद्यों के भिन्न–भिन्न घराने तथा नृत्य के घराने। संगीत जगत में जिस प्रकार घरानों का विकास हुआ उसी प्रकार भिन्न–भिन्न स्थानों पर संगीत की परम्पराओं का विकास हुआ तथा इन परम्पराओं का नामकरण परम्परा के संस्थापक या उसके स्थान के नाम को आधार मानकर हुआ।

उत्तर भारतीय संगीत में तबले के छः घराने हैं –

1 दिल्ली घराना– संस्थापक, उ0 सिद्धार खाँ ढ़ाढी

2 अजराड़ा घराना– संस्थापक, उ0 कल्लु खाँ, उ0 मीरू खाँ

3 लखनऊ घराना– संस्थापक, उ0 मोदु खाँ, उ0 बख्शु खाँ

4 फर्रूखाबाद घराना– संस्थापक, हाजी विलायत अली खाँ

5 बनारस घराना– संस्थापक, पं0 रामसहाय

6 पंजाब घराना– संस्थापक, पं0 भवानीदास

ऐसा ही एक गायकी का बहुप्रचलित एवं प्रतिष्ठित घराना ग्वालियर घराना रहा है। पूर्व में ग्वालियर में ध्रुपद गायन शैली का प्रचार–प्रसार था, जिसके साथ संगत स्वरूप पखावज वाद्य का प्रयोग होता था। ध्रुपद के साथ ही पखावज की परम्परा का प्रचार–प्रसार भी हो रहा था। इस परम्परा के कुछ महान पखावज वादक पं0 जोरावर सिंह जी (पं0 कुदऊ सिंह के समकालीन), पं0 सुखदेव सिंह, पं0 पर्वत सिंह, पं0 विजय सिंह जी, पं0 माधव सिंह जी आदि प्रमुख थे। इन महान कलाकारों के सानिध्य में पखावज परम्परा फल–फूल रही थी। ख्याल गायकी के प्रचार के साथ–साथ ग्वालियर में शनैः–शनैः तबला वादन की परम्परा भी विकसित होने लगी थी जिसका वादन पखावज के विद्वान भी करने लगे थे। ग्वालियर मे प्रचलित पखावज परम्परा के संस्थापक पं0 जोरावर सिंह तथा पं0 गणेश उस्ताद पखावज एवं तबला दोनों पर समानाधिकार रखते थे तथा उन्होंने अपने शिष्यों–प्रशिष्यों को पखावज के साथ तबला वादन की शिक्षा भी प्रदान की।

पृष्ठभूमि – मध्यप्रदेश राज्य का प्रसिद्ध ग्वालियर शहर की संगीत परम्परा भारतवर्ष के संगीत इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से अंकित है। ग्वालियर का संगीत वैभव और उसकी संगीत परम्परा बहुत उत्कृष्ट व प्रसिद्ध है। तोमर वंश के राजा मानसिंह (1486–1516) ने भारतीय संगीत का परिवर्द्धन और ऊर्ध्वीकरण

करते हुए उसे एक अविरल धारा के रूप में स्थापित किया एवं संगीत की ध्रुपद नामक गायन शैली एवं ग्वालियर शहर का नाम समस्त भारतवर्ष में अमर कर दिया।

भारतीय संगीत के संरक्षण, संवर्द्धन एवं प्रचार में ग्वालियर का प्रमुख स्थान रहा है। अनेक गायक, वादक एवं संगीत के प्रकाण्ड पण्डितों ने ग्वालियर की पुण्य–भूमि से समस्त भारत को अपनी कला से मुग्ध किया। यही पावन भूमि नायक बैजू जैसे अमूल्य रत्न की कार्य स्थली रही। यहीं पर महान संगीतज्ञ हस्सू खाँ, हद्दू खाँ, रहमत खाँ, निसार हुसैन खाँ, पं0 इचलकरंजीकर, उस्ताद हाफिज अली खाँ, पं0 जोरावर सिंह, पं0 पर्वत सिंह आदि प्रतिभा सम्पन्न संगीतज्ञ हुए जिन्होने अपने शिष्य समुदाय से ग्वालियर में संगीत का अभूतपूर्व प्रचार–प्रसार कर भारतीय संगीत में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

विषय का प्रादुर्भाव – ग्वालियर एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक संगीत नगरी है। इस नगर की उर्वरा भूमि में न केवल साहित्य और कला के महान कलाकार उत्पन्न हुए हैं, बल्कि महान तथा संसार प्रसिद्ध संगीतज्ञों को भी इसी नगरी में अपनी संगीत साधना करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

ग्वालियर का संगीत और उसकी संगीत परम्परा बहुत प्राचीन है। पूर्व समय में यहाँ ध्रुपद नामक गायन शैली का प्रचलन था तथा ध्रुपद के साथ संगत स्वरूप पखावज का प्रयोग होता था तथा पखावज की परम्परायें भी विकसित हो रहीं थीं। समय परिवर्तन के साथ ग्वालियर में ख्याल नामक गायन शैली जन्म एवं विकास हुआ एवं ग्वालियर ख्याल गायन शैली के घराने रूप में प्रसिद्ध हुआ। ख्याल गायन शैली के साथ संगत स्वरूप तबला प्रयोग किया जाने लगा। शनैः शनैः पखावज के विद्वान व कलाकार भी तबले की शिक्षा ग्रहण करने लगे एवं अपने अनेक शिष्य–प्रशिष्य तैयार किये जिससे तबले की परम्परा प्रचलित होने लगी। जिसके फलस्वरूप तबले की परम्परा का सुत्रपात हुआ। ग्वालियर में संगीत की अनेकों परम्परायें पूर्व समय से चली आ रहीं हैं। इन परम्पराओं के कारण ग्वालियर संगीत की नगरी कहा जाने लगा।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

उपरोक्त विषय से सम्बन्धित पूर्व में हुए शोध–कार्यों की जानकारी हेतु शोधार्थी ने सम्बन्धित साहित्य का सर्वक्षण किया। जिसमें विभिन्न पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाएँ, शोध–प्रबन्ध आदि का अध्ययन किया, जो इस प्रकार है –

पुस्तकें

- ग्वालियर की संगीत परम्परा

  लेखक– डॉ0 अरूण बांगरे

- पखावज की उत्पत्ति विकास एवं वादन शैलियाँ

  लेखक– डॉ0 अजय कुमार

- पखावज और तबला के घराने एवं परम्परायें

  लेखक– डॉ0 आबान ई0 मिस्त्री

शोध प्रबन्ध

- ''ग्वालियर की वादन परम्परायें तथा उनके वादन आचार्यः सरोद, सारंगी, तबला, पखावज के विशेष संदर्भ में''

  शोधकर्ता– हमांशुविष्णु विश्वरूप, नागपुर विश्वविद्यायल, 1998

- ''ख्याल का विकास तथा ग्वालियर के संगीतज्ञ और उनका योगदान''

  शोधकर्ता– गंगाधर राव तैलंग, इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, 1987

- ''ग्वालियर की संगीत परम्परा एवं संस्कृति''

  शोधकर्ता– प्रभाकर गोहदकर, अवधेश प्रताप विश्वविद्यालय, फैजाबाद 1983

- ''ग्वालियर घराने की ख्याल गायकी के सांगीतिक तत्वों का विश्लेषणात्मक अध्ययन''

  शोधकर्ता– दीपक शर्मा, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कूरूक्षेत्र

- ''ग्वालियर सम्भाग के लोकगीत''

शोधकर्ता– भारती शर्मा, इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय 1990

पत्रिकाएँ – संगीत कला विहार

- ग्वालियर के तोमर तथा सिंधिया नरेशों का सांगीतिक योगदान

  लेखक– अभय दुबे, अप्रैल, 2009

- ग्वालियर की संगीत परम्परा

  लेखक– डॉ0 अरूण बांगरे, नवम्बर 2006

- आगरा में तबला परम्परा के संस्थापक – पॅ0 लल्लू सिंह

  लेखक– डॉ0 नागेश्वर लाल कर्ण, नवम्बर 2001

- तानसेन ध्रुपद और संगीत

  लेखक– सुरेश वृत राय, जनवरी 1989

संगीत पत्रिका

- ग्वालियर के संगीतिक वैभव में सिंधिया वंश का योगदान

  लेखक– डॉ0 अरूण धर्माधिकारी, अक्टूबर 2011

अतः शोधार्थी ने जिस विषय का चयन किया है उस विषय के सर्वक्षण से जो सामग्री प्राप्त होती है वह चयनित विषय से आंशिक रूप से सम्बन्धित है, उपरोक्त विषय के सम्बन्ध में पूर्णरूप से जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासावश शोधार्थी ने ''ग्वालियर की सांगीतिक परम्परा में तबला वादन शैली का विवेचनात्मक अध्ययन'' विषय का चयन किया। यह विषय सर्वथा नवीन विषय है।

समस्या कथन – ''ग्वालियर की सांगीतिक परम्परा में तबला वादन शैली का विवेचनात्मक अध्ययन''।

समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या

ग्वालियर– विद्वानों के अनुसार, मध्य प्रदेश का शहर।

सांगीतिक– विद्वानों के अनुसार, संगीत का, संगीत की, संगीत से जुड़ा हुआ, संगीत से जुड़ी हुई।

परम्परा– लोक भारती, प्रमाणिक हिन्दी कोश के अनुसार, वह विचार, प्रथा या क्रम जो बहुत दिनों से प्रायः एक ही रूप में आया हो, किसी घटना, कार्य, पद, आदि का बहुत दिनसें से चला आया क्रम।

वादन– मानक विशाल हिन्दी शब्द कोश के अनुसार, कहना, बोलना, बाजा बजाना।

शैली– भाषा शब्द कोष क अनुसार, ढंग, प्रणाली, प्रथा, तरीका, रीति, पद्धति।

उद्देश्य – प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्य इस प्रकार हैं–

- ग्वालियर शहर का ऐतिहासिक अध्ययन करना
- ग्वालियर की सांस्कृतिक परम्परा का अध्ययन करना
- ग्वालियर में तबला वादन की परम्परा का अध्ययन करना
- ग्वालियर में प्रचलित गायन–वादन की परम्परा का अध्ययन करना
- तबला परम्परा के विद्वानों एवं कलाकारों के योगदान का अध्ययन करना
- ग्वालियर की तबला परम्परा की रचनाओं का अध्ययन करना

परिसीमांकन – निश्चिय कार्य की समय सीमा को देखते हुए यह शोध–कार्य ''ग्वालियर की सांगीतिक परम्परा में तबला वादन शैलि का विवेचनात्मक अध्ययन'' तक ही सीमित रहेगा।

अध्ययन विधि – प्रस्तुत शोध–कार्य प्रश्नावली, साक्षात्कार, अवलोकन, विवेचनात्मक, वर्णनात्मक विधि द्वारा पूर्ण किया जायेगा।

अध्ययन के स्त्रोत/उपकरण – प्रस्तुत शोध–कार्य विभिन्न पुस्तको, पत्र–पत्रिकाएँ, दृश्य–श्रृव्य सामग्री, विभिन्न विद्धानों के साक्षात्कार के माध्यम से तथा इण्टरनेट के माध्यम से पूर्ण किया जायेगा।

अध्ययन के सोपान –

भूमिका – सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

प्रथम अध्याय – ग्वालियर – एक परिचय

- ग्वालियर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
- ग्वालियर की भौगोलिक पृष्ठभूमि
- ग्वालियर की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

द्वितीय अध्याय – ग्वालियर में संगीत परम्परा एक परिचय

तृतीय अध्याय – तबला वादन की ग्वालियर परम्परा

- तबला वादन परम्परा का विकास
- तबला वादन परम्परा की वादन शैलि एवं विशेषताएँ

चतुर्थ अध्याय – ग्वालियर परम्परा के मूर्धन्य तबला वादकों का परिचय

पंचम अध्याय – तबला वादन की ग्वालियर परम्परा की परम्परागत रचनाएँ

उपसंहार

शोध का महत्व – इस कार्य के माध्यम से तबला वादन की ग्वालियर परम्परा एवं उस परम्परा के विद्वानों एवं कलाकारों से संगीत जगत को अवगत कराना है। साथ ही तबला वादन की ग्वालियर परम्परा की परम्परागत रचनाओं से संगीत जगत को अवगत कराना है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- शुक्ल, डॉ0 योगमाया – तबले का उदगम विकास एवं वादन शैलियाँ

प्रकाशक – हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

- मिस्त्री, डॉ0 आबान ई0 – पखावज एवं तबला के घराने एवं परम्पराएँ

प्रकाशक – पं0 केकी0 एस0 जिजिना स्वर साधना समिति मुम्बई, 2000

- बांगरे, डॉ0 अरूण – ग्वालियर की संगीत परम्परा

पब्लिशर्स – कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्युटर्स, नई दिल्ली

- कुमार, डॉ0 अजय – पखावज की उत्पत्ति विकास एवं वादन शैलियाँ

पब्लिशर्स – कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्युटर्स, नई दिल्ली

- मराठे, श्री मनोहर भालचन्द्रराव मराठे – ताल वाद्य शास्त्र

प्रकाशक – शर्मा पुस्तक सदन, लश्कर, ग्वालियर

- श्रीवास्तव, गिरीश चन्द्र – ताल कोश

प्रकाशक – रूबी प्रकाशक, गुरूतेग बहादुर नगर , इलाहाबाद

सम्भावित प्रश्नावली

1 ग्वालियर की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं ?

2 पूर्व समय में ग्वालियर में संगीत की कौन–कौन सी विधाएँ प्रचलित हैं ?

3 वर्तमान में ग्वालियर में संगीत की कौन–कौन सी विधाएँ प्रचलित हैं ?

4 वर्तमान में ग्वालियर में तबला वादन की परम्परा के सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं ?

5 ग्वालियर में प्रचलित तबला वादन की परम्परा के मुख्य श्रोत कहाँ से प्रारम्भ होता है ?

6 तबला वादन परम्परा का इतिहास कब से माना जाता है?

7 ग्वालियर की तबला वादन परम्परा का सूत्रपात किसके द्वारा हुआ माना जाता है ?

8 क्या ग्वालियर की तबला वादन परम्परा पर किसी अन्य घराने का प्रभाव दिखता है ?

9 क्या यहाँ की परम्परा पर पखावज का प्रभाव दिखता है ?

10 ग्वालियर की तबला वादन परम्परा में मुख्य विशेषता क्या–क्या है ?

11 ग्वालियर की तबला वादन परम्पराओं की मुख्य रचनाएँ कौन'–कौन सी है ?

12 ग्वालियर की तबला वादन के मुर्धन्य कौन कौन हैं ?

सम्भावित साक्षात्कार

1 पॅ0 भोगीराम रतौनिया – जबलपुर (मध्य प्रदेश)

2 पॅ0 देवेन्द्र कुमार वर्मा – निदेशक ललित कला संस्थान, दिल्ली

3 पॅ0 केशव तलेगॉवकर – आगरा

4 डॉ0 मुकेश सक्सैना – ग्वालियर

5 श्री श्यामसुन्दर माहौर – ग्वालियर

6 श्रीमति प्रियंका रतौनिया – भोपाल